# विदेशी यात्रियों की दृष्टि में प्रयाग–कुम्भ का अवलोकन

**श्रीमती नम्रता प्रसाद**

प्रयागराज अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को संजोए हुए है। यह नगरी उन प्राचीन नगरों में से एक है जो अपनी पवित्रता, सहृदयता, निर्मलता द्वारा आध्यात्मिक मुक्ति के साथ–साथ मानकिस मुक्ति के द्वार भी खोलती है। पवित्र गंगा–यमुना एवं विलुप्त सरस्वती का संगम जब हर आमो–खास को एक साथ चाहे वो नर हो या नारी, भिक्षु हो या गृहस्थ, अमीर हो गया गरीब, नागरिक हो या ग्रामिक, जाति सम्प्रदाय को बंधनों से मुक्त हो निर्मल करता है।

प्रयाग के उत्तर में प्रतापगढ़, उत्तर पश्चिम में फतेहपुर, उत्तर पूर्व में जौनपुर, दक्षिण में रीवॉ, दक्षिण पश्चिम में बाँदा, दक्षिण पूर्व में मिर्जापुर और पूर्व में वाराणसी के पड़ोसी ऐतिहासिक, धार्मिक नगरों से आवृत है। मनुस्मृति और पुराणों का 'प्रयागराज', ह्वेनसांग का 'पो–लोये–किया', अकबर का 'अल्लाहाबास', शाहजहाँ का 'इलाहाबाद', सन्तों–मुनियों की 'संगम नगरी', 'त्रिवेणी में समय–समय पर आने वाले विदेशी यात्रियों ने अपनी लेखनी द्वारा रोचक विवरण प्रस्तुत किया है।